IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय लोकतंत्र और राजनीतिक परिदृश्य में हो रहे परिवर्तन

डॉ० जयश्री सिंह

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

नीतीश्वर महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

बी० आर० ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

शोध सारांश :– इस आलेख में वर्तमान भारत के लोकतंत्र में हो रही महत्वपूर्ण परिवर्तन की चर्चा करेंगे। वर्तमान भारतीय राजनीति में कई बदलावों के माध्यम से स्पष्ट होता है, जिसमें चुनावी प्रतिस्पर्धा के स्वरूप में आए संस्थागत परिवर्तन, मध्यवर्ग की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव और समाज के पारंपरिक वर्गों का विघटन शामिल हैं। 2014 के बाद से भारतीय जनता पार्टी का सामाजिक और भौगोलिक विस्तार देश के राजनीतिक परिदृश्य को बदलने में सफल रहा है। इसके परिणामस्वरूप कांग्रेस और अन्य दल हाशिए पर चले गए हैं। वाम मोर्चा लगभग समाप्ति की ओर है और राज्य स्तरीय पार्टियों की शक्ति लगातार घटती जा रही है। बीजेपी ने चारों दिशाओं में अपने प्रभाव का विस्तार किया है, जिससे मतदाताओं के उन समूहों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहा है, जिनका पहले सामाजिक विभाजन के माध्यम से लाभ उठाया जाता था। इसी प्रकार, पिछले दो दशकों में राज्य स्तर की विशेषताएं भी बदल रही हैं।

शब्द कुंजी : – वर्तमान भारतीय राजनीति, सोशल मीडिया, प्रतिस्पर्धा, पारंपरिक वर्ग, विघटन।

परिचय :– आज जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 77 वर्ष पूरे करने का उत्सव मना रहा है, तब हम तेजी से बदलते इस राजनीतिक परिदृश्य में, देश के लोकतंत्र को उसके वर्तमान स्वरूप में लाने में राजनीतिक दलों की भूमिका का विश्लेषण कर रहे हैं। यह एक महत्वपूर्ण अवसर है, जब हम यह समझने का प्रयास कर रहे हैं कि कैसे राजनीतिक दलों ने भारतीय लोकतंत्र को आकार देने में योगदान दिया है और किस प्रकार वे समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ को संसद तक पहुँचाने का कार्य करते हैं।

आधुनिक लोकतंत्र की कल्पना बिना राजनीतिक दलों के करना असंभव है, क्योंकि ये तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जनता और सरकार के बीच एक पुल का कार्य करते हैं। सबसे पहले, राजनीतिक दल व्यक्तिगत समस्याओं की मतदान के माध्यम से अभिव्यक्ति का एक साधन प्रदान करते हैं। जब नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं, तो वे केवल एक व्यक्ति को चुनने का कार्य नहीं करते, बल्कि वे अपने विचारों, आकांक्षाओं और समस्याओं को एक राजनीतिक रूप में व्यक्त करते हैं।

दूसरे, राजनीतिक दल राजनीतिक आकांक्षाओं को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। ये दल न केवल चुनावी प्रक्रिया में भाग लेते हैं, बल्कि वे समाज के विभिन्न वर्गों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को समझते हुए नीतियों का निर्माण करते हैं। इस प्रकार, वे समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं और नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हैं।

तीसरे, राजनीतिक दल विभिन्न वर्गों के हितों के लिए राजनीतिक समाधान का मंच प्रदान करते हैं। भारत जैसे विविधता भरे देश में, जहाँ विभिन्न जातियाँ, धर्म, और भाषाएँ हैं, राजनीतिक दलों का यह कर्तव्य है कि वे सभी वर्गों की आवाज़ को सुनें और उनके हितों का प्रतिनिधित्व करें। यह सुनिश्चित करना कि सभी वर्गों को समान अवसर और अधिकार मिले, लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार, राजनीतिक दल न केवल चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा हैं, बल्कि वे लोकतंत्र के अभिन्न अंग हैं। उनके बिना, समाज की विविधता और जटिलताओं को समझना और उन्हें सही तरीके से संबोधित करना संभव नहीं होगा। आज के इस विशेष अवसर पर, हमें यह याद रखना चाहिए कि एक मजबूत और स्वस्थ लोकतंत्र के लिए राजनीतिक दलों की भूमिका को समझना और उनका समर्थन करना अत्यंत आवश्यक है।

भारत में दलगत व्यवस्था का विकास

राजनीतिक दलों का अपना एक संगठनात्मक जीवन होता है, लेकिन वे स्थायी पार्टी व्यवस्था का भी हिस्सा होते हैं। राजनीतिक दल, व्यवस्था के 'अंग' के रूप में कार्य करते हैं। इस प्रकार, जब व्यवस्था में परिवर्तन होता है, तो इसका प्रभाव 'अंगों' पर भी पड़ता है। यह सर्वविदित है कि भारत में दलगत व्यवस्था ने अपने आरंभ से अब तक कम से कम चार महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे हैं। पहली दलगत व्यवस्था (1952–1967) में कांग्रेस सबसे प्रमुख पार्टी थी, जो राष्ट्रीय स्तर के चुनावों के साथ–साथ अधिकांश राज्यों में भी विजय प्राप्त करती थी और अन्य दलों पर प्रभुत्व बनाए रखती थी। इसी कारण उस समय को 'कांग्रेस व्यवस्था' के नाम से जाना जाता है। दूसरे चरण में, कई राज्यों में कांग्रेस के खिलाफ विपक्ष का उदय हुआ, जिससे राज्य की दलगत व्यवस्था (1967–1989) में ध्रुवीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई। इस अवधि में, कांग्रेस ने राष्ट्रीय स्तर के चुनावों में जीत हासिल करना जारी रखा।

तीसरे चरण में कांग्रेस के बाद की राजनीतिक स्थिति का आरंभ हुआ, जिसमें एक प्रतिस्पर्धात्मक बहुदलीय प्रणाली (1989–2014) का उदय हुआ, जिसमें राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस का प्रभाव कमज़ोर पड़ गया। इस समय के दौरान, हमने केंद्र में गठबंधन सरकारों का गठन होते देखा, क्योंकि कोई भी एक पार्टी अपने बलबूते पर बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी। इस चरण में, राष्ट्रीय राजनीति के साथ–साथ राज्य स्तर की राजनीति में भी क्षेत्रीय दलों की शक्ति में वृद्धि हुई। देश की वर्तमान राजनीतिक संरचना की शुरुआत 2014 में हुई, जब भारतीय जनता पार्टी ने अपने दम पर बहुमत प्राप्त किया। बीजेपी ने 2019 में पुनः अपने बल पर बहुमत हासिल कर और अपनी पहुंच को बढ़ाकर भारत को एक दल के प्रभुत्व वाले दूसरे चरण में प्रवेश कराया है। आज भारतीय राजनीति का झुकाव दक्षिणपंथ की ओर इस हद तक बढ़ गया है कि विपक्ष या तो चुप है या उसकी कोई भी रणनीति सफल नहीं हो रही है।

भारत की दलगत व्यवस्था को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तत्व

भारत में चुनावों के लिए कौन सी वैचारिक संरचना का उपयोग किया जाता है? और किस प्रकार 'आइडियाज़ ऑफ़ इंडिया' ने देश के राजनीतिक दलों, दलगत व्यवस्था और लोकतंत्र को प्रभावित किया है? इस संदर्भ में पांच प्रमुख प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं:

1. भारत की दलगत राजनीति गहराई से वैचारिक है, और स्वतंत्रता के बाद से सरकार की भूमिका को लेकर मतभेदों ने देश की दलगत व्यवस्था में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। क्या सरकार को सामाजिक संरचनाओं में हस्तक्षेप करना चाहिए या नहीं? क्या उसे कमजोर वर्गों के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिए या नहीं? इस प्रकार के कई मुद्दों पर विभिन्न विचारों की ऐतिहासिक परंपराएँ रही हैं। इन

विचारों ने बीसवीं सदी के मध्य में देश के स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा और दशा को प्रभावित किया था।

2. राजनीतिक दलों के विचारधारा आधारित आंदोलनों ने कांग्रेस के प्रभुत्व के युग को बहुदलीय प्रतिस्पर्धा में परिवर्तित किया, जिसके परिणामस्वरूप बीजेपी का एकदलीय वर्चस्व का युग आया है। इस परिवर्तन के कारण न केवल राजनीतिक दलों के भीतर विभिन्न वर्गों की प्रतिनिधित्व में वृद्धि हुई है, बल्कि संसद और राज्य विधानसभाओं में भी समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व बढ़ा है, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधियों की संख्या में। कुछ मामलों में, भारत की राजनीति आज अपने सामाजिक ढांचे का एक बेहतर प्रतिबिंब प्रस्तुत करती दिखाई दे रही है। यह विडंबना है कि इस दौरान विधायी संस्थानों के नियमों और कार्यप्रणालियों में गिरावट भी देखी गई है।

3. इस लंबे ऐतिहासिक संघर्ष में बीजेपी की वर्तमान विजय इस बात का प्रमाण है कि वह उन नागरिकों को अपने पक्ष में लाने में सफल रही है, जो सामाजिक नियमों में सरकारी हस्तक्षेप नहीं चाहते; संपत्ति के वितरण से सरकार को अलग रखना चाहते हैं; और धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित सभी सामाजिक समूहों को विशेष पहचान देने की इच्छा रखते हैं। बीजेपी के समर्थकों में वे लोग भी शामिल हैं, जो लोकतंत्र को बहुसंख्यक वर्ग के मूल्यों को प्राथमिकता देने के रूप में देखते हैं। भारत के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वाली और स्वतंत्र भारत के 75 वर्षों में से अधिकांश समय तक शासन करने वाली कांग्रेस अब लगातार हाशिए पर जा रही है। कांग्रेस का सामाजिक आधार और उसका वैचारिक दायरा निरंतर संकुचित होता जा रहा है। इस प्रकार, राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का उभरता हुआ ढांचा यह संकेत दे रहा है कि भविष्य में राष्ट्रीय स्तर पर बीजेपी को किसी विशेष चुनौती का सामना नहीं करना पड़ेगा।

4. भारत ने राजनीतिक दलों के गठन के लिए कम से कम पांच महत्वपूर्ण चरणों का अनुभव किया है: आज़ादी से पहले का चरण दलगत व्यवस्था के चार चरणों में विभाजित है। भारत में राजनीतिक दलों की स्थापना की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल है, जिसके कारण हर वर्ष (यदि सैकड़ों नहीं तो) अनेक नई पार्टियां उभरती हैं। हालांकि, इनमें से केवल कुछ ही दल दो चुनावी चक्रों से आगे बढ़ने में सफल होते हैं। छोटे दल अक्सर बड़ी पार्टियों में विलीन हो जाते हैं या धीरे–धीरे समाप्त हो जाते हैं। मतदाताओं के बीच व्यापक बदलावों के बावजूद, राजनीतिक नाम सामान्यतः स्थिर रहते हैं और पार्टी के ब्रांड की प्रासंगिकता बनी रहती है। स्वतंत्र रूप से चुनाव जीतने वाले उम्मीदवारों की संख्या बहुत कम होती है। इसी प्रकार, कई राजनीतिक दल एक–दूसरे के साथ काफी समानताएँ रखते हैं, चाहे वह उनके संगठनात्मक ढांचे, कार्यप्रणाली, या जनसंघटन के तरीकों में हो। भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों के आलाकमान की बढ़ती प्रवृत्ति गंभीर परिणाम उत्पन्न कर रही है। ऐसे दल सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में असफल रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप समाज की शिकायतें सड़कों पर गैर–राजनीतिक संगठनों के रूप में प्रकट होती हैं। इसी प्रकार, भारत के राजनीतिक दल अपनी भूमिका को राजनीतिक गोलबंदी के माध्यम से सही तरीके से निभाने में विफल हो रहे हैं। आज विभिन्न हित समूहों का व्यापक गठबंधन बनने के बजाय, अधिकांश राजनीतिक दल कुछ विशेष वर्गों या समाज के सीमित हिस्सों के प्रतिनिधि बनते जा रहे हैं। फिर भी, इस गिरावट के बावजूद, अधिकांश राजनीतिक दल लोकतंत्र में अपनी कुछ महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से निभा रहे हैं।

5. अंततः, विपक्ष के भीतर असंगठितता और बीजेपी के प्रभाव के कारण, भविष्य में देश की सत्ता अधिक पारंपरिक और ग्रामीण सामंती वर्ग के नियंत्रण में जा सकती है। इस सत्ता परिवर्तन से वैचारिक विभाजन और गहरा होने की संभावना है। इससे सामाजिक मानदंडों और उदारवादी सिद्धांतों पर होने वाली चर्चाएँ लंबे समय तक और अधिक विवादास्पद बनी रहेंगी। हालांकि, लोकतंत्र की प्रक्रिया के मूलभूत

तत्व, जैसे समय पर चुनाव, को लेकर कोई तत्काल खतरा नहीं दिखाई दे रहा है। लेकिन लोकतंत्र के अन्य व्यापक पहलुओं को निश्चित रूप से क्षति पहुंचेगी, और इस संदर्भ में भारत के लोकतंत्र की नई परिकल्पना में राजनीतिक दलों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

निष्कर्ष : इस संदर्भ में प्रश्न यह उठता है कि हम अपनी राजनीति के उभरते विरोधाभासों को किस प्रकार समझें: एक ओर एक सशक्त प्रतिद्वंदी राजनीतिक ढांचा है, जहां राज्य स्तर के दल विधानसभा के महत्वपूर्ण चुनावों में सफलता प्राप्त कर रहे हैं, और दूसरी ओर एक सक्रिय नागरिक समूह है, जो बीजेपी के वैचारिक दबदबे के खिलाफ सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन कर रहा है। इसके साथ ही, हम उस विरोधाभास की व्याख्या कैसे करें, जहां अधिकांश राजनीतिक दलों का संगठनात्मक ढांचा कमजोर होता जा रहा है और उन पर केंद्रीयकृत आलाकमान का नियंत्रण बढ़ता जा रहा है। दूसरी ओर, ये राजनीतिक दल हाशिए पर पड़े समूहों की प्रतिनिधित्व करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, जो लोकतांत्रिक परिणामों की दृष्टि से आवश्यक है।

भारत का लोकतंत्र अपने आप में अद्वितीय है, इसमें कोई संदेह नहीं है। यह संस्थागत ढांचे का परिणाम है और समाज में गहराई से स्थापित विरोधाभासी शक्तियों के दबाव में अचानक उत्पन्न हुआ परिणाम भी है। भारतीय राजनीतिक दल इन सामाजिक शक्तियों के लिए एक मंच का कार्य करते हैं, हालांकि उनका प्रदर्शन हमेशा संतोषजनक नहीं रहा है। कुछ मामलों में वे सफल रहे हैं, जबकि अन्य में असफलता का सामना करना पड़ा है। इन राजनीतिक दलों की लचीलापन और तेजी से नए परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढालने की क्षमता रोज़मर्रा की राजनीति को सक्रिय बनाए रखती है। भारत में राजनीति का सामान्य होना और नेताओं की उद्यमिता की भावना किसी भी राजनीतिक संस्कृति के स्थायित्व को रोकने में सहायक होगी। इसके अतिरिक्त, भारत की सांस्कृतिक विविधता का अर्थ है कि कोई भी चुनावी बहुमत स्थायी नहीं होता और न ही कोई वैचारिक प्रभाव हमेशा के लिए कायम रह सकता है।

सन्दर्भ सूची :–

[1] प्रियंवद 2005: भारतीय राजनीति के दो आरव्यान, हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।
[2] सेंगर, शैलेन्द्र 2009: भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियां, गुंजन प्रकाशन, नई दिल्ली।
[3] राय, अरूंधति 2012: कठघरे में लोकतंत्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
[4] त्रिपाठी, ममता मणि 2013: समकालीन भारतीय राजनीति के मुद्दे समस्या एवं समाधान, भारती पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, फैजाबाद।
[5] पाण्डेय, अरूण 2000: हमारा लोकतंत्र और जानने का अधिकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
[6] दुबे, एम.पी.: धर्मनिरपेक्षवाद और भारतीय प्रजातंत्र, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
[7] सिंह, महेश्वर 2000: भारतीय लोकतंत्र समस्याएं व समाधान, साहित्यगार, जयपुर।